अगरचंद नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ भाग-२ (फोल्डर नं. ०२०४३)

मुख्य टाइटल

संपादकीय निवेदन

अनुक्रमणिका

द्वितीय खण्ड

खण्ड-१ – इतिहास और पुरातत्त्व

प्रतिहार काल में पूजित राजस्थान के कुछ अप्रधान देवी-देवता – डॉ. दशरथ शर्मा ----------३

मध्यकालीन मारु-गुर्जर चित्रकला के प्राचीन प्रमाण – डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह -------- ७

पल्लू की प्रस्तर प्रतिमाएँ – श्री देवेन्द्र होण्डा -- ११

ओसियाँ – डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ शर्मा ---१८

मध्यप्रदेश की प्राचीन जैन कला – प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी -------------------------------- २२

प्राचीन वज्रमण्डल में जैनधर्म का विकास – श्री प्रभुदयाल मीतल ------------------------- २५

भारतीय नौसेना ऐतिहासिक सर्वेक्षण – श्री गायत्रीनाथ पंत -------------------------------- ३४

Chandra Images from Rajasthan – R. C. Agarwala -- 44

Prehistoric Background of Rajasthani Culture – V N Mishra ------------------------------ 49

Mewar Painting – Kuwar Sangram Singh--- 68

Coins of The Malavas of Rajasthan – Shri Kalyan Kumar Das Gupta------------------ 77

Tantric Culture Eastern India - Dr. Upendra Thakur -- 83

The Five Apbhramsa Verses Composed by Munja, The Parmara King of Malava – Shri H C Bhayani-- 90

Jainism and Vegetarianism – Dr. A N Upadhye --- 94

Visvamitra in the Kalpasutras – Dr. Umesh Chandra Sharma--------------------------- 97

The Quest for a Proper Perspective in Vedic Interpretation – Prof. N M Kansara -- 101

8th Century Document on means of Earning Money – Prof. Prem Suman Jain----- 109

The Problem of Apadha in the Rgiveda – Smt. Y. S. Shah------------------------------ 115

A Method of Grow Crooked Bamboos for Palanquin Beams – Shri K V Sharma-- 118

राजस्थान के शिलालेखों का वर्गीकरण – श्री रामवल्लभ सोमानी ------------------------ १२३

खण्ड-२ – भाषा और साहित्य

पाणिनिकाल एवं संस्कृत में द्विवचन – श्री उदयवीर शास्त्री ------------------------------ १३७

संस्कृत के दो ऐतिहासिक चम्पू – डॉ. बलदेव उपाध्याय -------------------------------- १४२

महोपाध्याय क्षमाकल्याण गणि की संस्कृत साहित्य-साधना – डॉ. दिवाकर शर्मा --------- १४६

प्राकृत के कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति – डॉ. बसंत गजानन राहुरकर ------------------------ १५३

अपभ्रंश कथा काव्यों की भारतीय संस्कृतिको देन – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल --------- १५५

अपभ्रंश का एक अचर्चित चरितकाव्य – डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री ------------------------- १६०

राजस्थान का युग-संस्थापक कथा-काव्य निर्माता हरिभद्र – डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री --------- १६७

तथाकथित हरिवंशचरियं की विमलसूरि कर्तृता-एक प्रश्न – डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी --------- १७८

महाकवि रइधू की एक अप्रकाशित सचित्र कृति पासणाहचरिउ – डॉ. राजाराम जैन ------- १८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शत्रुञ्जय तीर्थाष्टक – महोपाध्याय विनयसागरजी -- १८८
दिल्ली पट्ट के मूलसंघीय भट्टारक प्रभाचन्द्र और पद्मनन्दि – पं. परमानन्द जैन शास्त्री -- १९१
अमरु शतक की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. अजयमित्र शास्त्री ---------------------------- १९८
कान्हड़दे प्रबन्ध और उसका ऐतिलाहिसक महत्त्व – डॉ. सत्यप्रकाश --------------------- २०७
कान्हड़दे प्रबन्ध-सांस्कृतिक दृष्टि से – मूल-डॉ. भोगीलाल सांडेसरा (अनुवादक-श्री जयशंकर शर्मा) --२११
रामरासोकार महाकवि माधवदास दधिवाड़िया – श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ---------------- २२४
मेवाड़प्रदेश के प्राचीन डिंगल कवि – श्री देव कोठारी ------------------------------------ २२९
राजस्थानी बातों में पात्र और चरित्र-चित्रण – डॉ. मनोहर शर्मा ------------------------- २४५
खण्ड-३ – विविध
जैनतर्कशास्त्र में हेतु प्रयोग – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---------------------------------- २५९
जैन दर्शन में नैतिक आदर्श के विभिन्न रूप – डॉ. कमलचन्द सोगानी ------------------ २६४
ऐतरेय आरण्यकमें प्राण-महिमा – आचार्य विष्णुदत्त गर्ग -------------------------------- २६८
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में प्रयोग – श्री श्रीरंजन सूरिदेव -------------------------------- २७२
श्री वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजीका जीवन वृत्त – केशवराम का. शास्त्री ---------------------- २७६
द्वैत-अद्वैत का समन्वय – श्री आनन्दस्वरूप गुप्त -- २८९
चित्रकाव्य का उत्कर्ष-सप्तसन्धान महाकाव्य – श्री सत्यव्रत तृषित ----------------------- २९७
शिवराज भूषण में गुसलखाना का प्रसंग – श्री वेदप्रकाश गर्ग---------------------------- ३०८
होथल निगाभरी और ओढ़ आम की सुप्रसिद्ध लोककथा का वस्तुसाम्य एवं इसके आधार पर विचार – श्री पुष्कर नन्दरावकर --- ३१२
तेजा लोक गीत का एक नया रूपांतर – श्री नरोत्तमदास स्वामी ------------------------- ३१९
रणछोड़ भट्ट कृत कुमारकाव्य और महाराणा प्रतापसे सम्बन्धित दो विवादास्पद प्रश्न – डॉ. व्रजमोहन जावलिया -- ३२६
परिशिष्ट-१ – अगरचन्द नाहटा अभिनन्दोत्सव समारोह का विवरम शुभ कामना संदेश -------- ३३१
परिशिष्ट-२ – बीकानेर में आयोजित अभिनन्दन समारोह के निमित्त सहयोगदाताओं की शुभ नामावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org